वराहमिहिर

वराहमिहिर अवन्ति के निवासी थे। माता का नाम सत्यवती तथा पिता का नाम आदित्यदास था। इनके पुत्र का नाम पृथुयश था, जिसने 'षट्पञ्चाशिका' की रचना की। अपने पिता से ही इन्होंने ज्योतिष विद्या का अध्ययन किया। (वृहद्जातक उपसंहार श्लोक)। वराहमिहिर ने अपने स्वरचित ग्रन्थ पञ्चसिद्धान्तिका में गणित का आरम्भ वर्ष 527 शक अर्थात् 505 ई० माना है। इस आधार पर उनका जन्म का समय छठी शताब्दी का आरम्भिक काल माना जाता है। इन्हें यवन भाषा का भी ज्ञान था, इस कारण इन्होंने यवन ज्योतिष शास्त्र को भी परिभाषित किया।

वराहमिहिर के ग्रन्थ

(1) पंचसिद्धान्तिका - यहाँ ब्रह्म, सूर्य, पोलिश (पुलिस्त), रोमक व वशिष्ठ पाँच सिद्धान्तों का संग्रह उदाहरण सहित मिलता

है, जिसका रचनाकाल 505 ई० माना है।

(2) बृहद्योग यात्रा - वर्तमान में यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, वराहजातक में वराहमिहिर ने इसमें 18 अध्ययन होने का संकेत किया है।

(3) वृद्जातक-इसे होराशास्त्र भी कहते हैं जो कि 25 अध्यायों में है।

(4) विवाह पटल - यह कृति भी अनुपलब्ध उल्लेख वृहतसंहिता में प्राप्त होता है।

(5) लघु जातक वृहदजातक का लघुरूप जिसमें मात्र 177 श्लोक है।

(6) बृहत्संहिता - यह ग्रन्थ 100 से 105 अध्यायों में विभक्त है, जहाँ पहले 10 अध्यायों में ग्रह-भ्रमण तथा ग्यारहवें अध्याय में धूमकेतुओं का निरूपण है।

12-10 अध्याय - सप्तर्षियों का वर्णन

14 अध्याय - सम्पूर्ण भूमण्डल को कूर्म चक्र बताया है।

15-16 अध्याय गृहों एवं नक्षत्रों के अधीन वस्तुएँ बनाई है।

17-18 अध्याय. ग्रह युति व चन्द्र समागम का विवेचन है। पृथ्वी पर होने वाले फल

21-23 अध्याय वर्षा तथा बादलों के विषय में

19वाँ अध्याय

24-25 अध्याय वर्षा का विवेचन

26-38 अध्याय विभिन्न उत्पातों का फल विषय में भविष्यवाणी

40-42 अध्याय फसलों की उत्पति, महंगाई आदि विषय

43-53 अध्याय - राजाओं के लिए आवश्यक बातें, शरीर चिह्न, वास्तु के विषय में वर्णन।

54-60 अध्याय पानी की सत्ता, वृक्ष चिकित्सा, मंदिर निर्माण, प्रतिमा प्रतिष्ठा विधि।61-70 अध्याय

71-73 अध्याय - हाथी गाय कुत्ता, घोड़ा, पुरुष-स्त्री लक्षण शास्त्र को बताया है। छत्र चवंर आदि का लक्षण

74 वां अध्याय- स्त्री प्रशंसा।

75 से 79 वां अध्याय- पति प्रेम वृद्धि उपाय, काम वर्धक जड़ी बूटियाँ आदि का निर्माण।

80-85 अध्याय- विविध रत्नों की परीक्षा व लक्षण।

86-97 अध्याय- विभिन्न प्राणियों की चेष्टाओं से शुभाशुभ संकेतों कथन।

98-100 अध्याय- नक्षत्र तिथि व करण सम्बन्धि बातें।

101-102 अध्याय - नक्षत्र चक्र व राशि चक्र के विषय में।

इस प्रकार 100 से अधिक अध्याय मिलते हैं।

वर्तमान में वृहत्संहिता की एक संस्कृत टीका प्राप्त होती है, जो

भट्टोत्पल द्वारा रचित है। इसके पश्चात् पण्डित श्री अच्युतानन्द झा शर्मणा,

श्री कृष्णदमन, श्री बी सुब्रह्मण्यम् शास्त्री आदि आचार्यों द्वारा रचित हिन्दी

तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित सम्पूर्ण संहिता प्राप्त होती है।

(7) समास संहिता - यह ग्रन्थ भी सम्प्रति उपलब्ध नहीं होता,

जिसका उल्लेख भट्टोतपल ने किया है।

इन सब ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थ भी वराह के नाम से मिलते ये ग्रन्थ वराहमिहिर द्वारा ही विरचित हैं, इसमें संदेह है। इस प्रकार वर्तमान में वृहज्जातक तथा वृहत्संहिता के नाम से ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, जो वराहमिहिर के पाण्डित्य, विस्तृत ज्ञान का परिचय करवाते हैं।

वराहमिहिर रचित वृहद्संहिता का विभाजन अध्यायों में किया गया है, जिनकी संख्या कहीं 100 तथा कहीं 100 से अधिक भी प्राप्त होती है, इसी कारण वृहदसंहिता के 'स्त्री प्रशंसाध्याय' की संख्या कहीं 73 तथा कहीं भी 74 मिलती है।

Lecture by-Dr. Ritu Mishra

3rd SEM.

Department of Sanskrit

Shivaji College.